श्री अश्विनी कुमार चौबे

राष्ट्रधर्म के दीपस्तंभ और सनातन संस्कृति के यशस्वी ध्वजवाहक

परिचय - व्यक्तित्व का उदय

भारतभूमि का इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारतीय राजनीति में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो अपने कार्यों से समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। श्री अश्विनी कुमार चौबे भी ऐसे ही एक राजनेता हैं जिनका जीवन उपलब्धियों और चुनौतियों दोनों से भरा रहा है। परंतु जब-जब अंधकार छाता है, तब-तब कोई दीपक जल उठता है। गीता का यह श्लोक इसका प्रमाण है–

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।"

यह स्मरण कराता है कि हर युग में ऐसे पुरुषार्थी जन्म लेते हैं, जो धर्म और संस्कृति की ध्वजा पुनः फहराते हैं। इन्हीं महान पुरुषार्थियों की परंपरा में एक नाम है–श्री अश्विनी कुमार चौबे। 2 जनवरी 1953 को बिहार की पावन गोद में जन्मे चौबे जी उस धरती की संतान हैं जिसने महर्षि विश्वामित्र, महाकवि वाल्मीकि और असंख्य महापुरुषों को जन्म दिया। उनका व्यक्तित्व राजनीति की तपस्या, समाजसेवा की साधना और संस्कृति की साधुता का अद्भुत संगम है।

छात्र जीवन और प्रारंभिक संस्कार

बचपन से ही उनमें धार्मिकता और अनुशासन का विशेष प्रभाव था। पारिवारिक वातावरण संस्कारमय था, जिसने उन्हें राष्ट्र, संस्कृति और समाज की ओर झुकाव दिया। शिक्षा के दौरान ही उनमें वाणी की ओजस्विता और नेतृत्व की क्षमता झलकने लगी।

विद्यालय और महाविद्यालयों में वे केवल छात्र नहीं रहे, बल्कि आयोजनों और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के केंद्रबिंदु बने। साथियों को प्रेरित करने और संगठन खड़ा करने का गुण उनमें प्रारंभ से ही विद्यमान था।

जेपी आंदोलन से जुड़ाव

1970 का दशक भारत के राजनीतिक इतिहास में संघर्ष और नवजागरण का काल था। विश्वविद्यालय विचार-विमर्श और क्रांति के केंद्र बन चुके थे। इसी दौर में युवा अश्विनी चौबे ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) से सक्रिय जुड़ाव किया। उनकी वाणी में जोश, व्यक्तित्व में आकर्षण और विचारों में दृढ़ता थी। वे छात्र आंदोलनों में केवल सहभागी नहीं थे, बल्कि प्रेरणा-स्रोत और विचारक के रूप में उभरे।

1974 का लोकनायक आंदोलन

1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भ्रष्टाचार और सत्ता के दमन के विरुद्ध बिगुल फूँका। चौबे जी भी इस ऐतिहासिक आंदोलन के सक्रिय सिपाही बने। उनके लिए यह आंदोलन केवल सत्ता परिवर्तन का संघर्ष नहीं था, बल्कि–

“समाज में सत्य, राजनीति में पारदर्शिता और राष्ट्र में स्वाभिमान का पुनर्जागरण।”

आपातकाल की कठिन घड़ी में उन्होंने साहस और त्याग का परिचय दिया। अनेक बार जेल गए, किंतु उनके उत्साह में कमी नहीं आई।

“अन्याय अंधकार जब, छाया भारतभूरि ।
युवा जगे तब देश में, जल उठी मशालें नूरि ॥”

राजनीति की ओर पहला कदम- जेपी आंदोलन

जेपी आंदोलन भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास का ऐसा महत्त्वपूर्ण अध्याय है, जिसने राजनीति के नैतिक आधार को पुनः स्थापित किया। यह केवल भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह नहीं था, बल्कि यह भारत की राजनीति में **सत्य, पारदर्शिता और जनशक्ति** की पुनः प्रतिष्ठा का महाआंदोलन था।

इस महान जनक्रांति को आगे बढ़ाने में कई नेताओं की भूमिका रही, जिनमें चार नाम विशेष रूप से सूत्रधार के रूप में सामने आते हैं–**राम बहादुर राय**, **के. एन. गोविंदाचार्य**, **सुशील कुमार मोदी** और **अश्विनी कुमार चौबे**। इन सबकी अलग-अलग भूमिकाएँ थीं, किंतु सबका लक्ष्य एक ही था–लोकतंत्र को सशक्त करना और जनता को उसकी असली ताकत का परिचय कराना।

राम बहादुर राय - वैचारिक धुरी और मार्गदर्शक

वरिष्ठतम सूत्रधार **राम बहादुर राय** थे, जिन्होंने इस आंदोलन को वैचारिक गहराई दी। वे उस समय पत्रकारिता और संगठन, दोनों स्तरों पर सक्रिय थे। उनकी लेखनी और वक्तृत्व ने जेपी के विचारों को आमजन तक पहुँचाया। वे मानते थे कि यह संघर्ष केवल भ्रष्ट सरकार के खिलाफ नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा को बचाने का आंदोलन है। उनकी वरिष्ठता और अनुभव ने छात्रों और युवाओं को दिशा दी।

के. एन. गोविंदाचार्य - रणनीतिकार और संगठनकर्ता

दूसरे प्रमुख सूत्रधार **के. एन. गोविंदाचार्य** थे, जिन्हें आंदोलन का दार्शनिक और रणनीतिक मस्तिष्क कहा जाता है। उन्होंने विचारधारा और संगठन दोनों को जोड़ने का काम किया। उनके मार्गदर्शन में आंदोलन का स्वरूप केवल विद्रोह न रहकर एक सुनियोजित सांस्कृतिक और राजनीतिक अभियान बना। गोविंदाचार्य ने छात्र नेताओं को वैचारिक आधार प्रदान किया और उन्हें समझाया कि राजनीति केवल सत्ता पाने का साधन नहीं, बल्कि जनसेवा और समाज सुधार का मार्ग है।

सुशील कुमार मोदी - छात्र शक्ति के प्रेरणास्रोत

तीसरे सूत्रधार **सुशील कुमार मोदी** थे। वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) के माध्यम से आंदोलन की छात्र धारा को संगठित करने में जुटे। उन्होंने गाँव-गाँव और विश्वविद्यालयों में जाकर युवाओं को जोड़ा और जेपी के आह्वान को छात्रशक्ति की ललकार बना दिया। उनके संगठन कौशल ने यह साबित किया कि छात्र केवल शिक्षा ग्रहण करने वाले नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की धारा को मोड़ने वाले भी हो सकते हैं। सुशील मोदी आगे चलकर बिहार की राजनीति के प्रमुख स्तंभ बने, किंतु उस दौर में वे छात्र-शक्ति के प्रतीक थे।

अश्विनी कुमार चौबे - उर्जा और संगठन के युवा चेहरा

इन तीन सूत्रधारों के साथ चौथे नाम के रूप में उभरे **अश्विनी कुमार चौबे**। वे उस समय युवावस्था में थे और उनका व्यक्तित्व छात्रों और युवाओं को गहरे प्रभावित करता था। उनकी वाणी में जोश और संगठन क्षमता ने उन्हें आंदोलन का अग्रिम पंक्ति का चेहरा बना दिया। वे केवल छात्र नेता भर नहीं रहे, बल्कि अपने उत्साह और त्याग से उन्होंने यह संदेश दिया कि जेपी आंदोलन युवाओं का आंदोलन है।

उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालयों और नगरों में सभाएँ हुईं, जुलूस निकाले गए और सरकार के दमन के बावजूद युवाओं का मनोबल टूटने नहीं दिया। वे जेपी के विचारों के केवल अनुयायी नहीं थे, बल्कि उन्हें जन-जन तक पहुँचाने वाले प्रभावी प्रवक्ता थे।

सामूहिक संगम - एक नैतिक क्रांति

राम बहादुर राय की वैचारिक गहराई, गोविंदाचार्य की रणनीति, सुशील मोदी की छात्रशक्ति और अश्विनी चौबे की जोशीली ऊर्जा - इन सबके संगम ने जेपी आंदोलन को सफल बनाया। यह आंदोलन आने वाले दशकों की राजनीति के लिए कई नए नेताओं का निर्माण स्थल साबित हुआ।

जेपी आंदोलन ने यह स्थापित किया कि जब वरिष्ठों का मार्गदर्शन और युवाओं की ऊर्जा मिलती है, तब लोकतंत्र को नया जीवन मिलता है। इस संग्राम से निकले नेता आगे चलकर भारतीय राजनीति में केंद्रीय भूमिका निभाने लगे। श्री अश्विनी कुमार चौबे का नाम भी इन्हीं में से है, जिन्होंने इस आंदोलन से मिली प्रेरणा को जीवनभर जनसेवा और संस्कृति की साधना में रूपांतरित किया।

भागलपुर से पाँच बार विधायक

बिहार की ऐतिहासिक नगरी भागलपुर उनके राजनीतिक जीवन का प्रथम आधार बनी। भागलपुर की जनता ने उन्हें लगातार पाँच बार विधायक चुना, यद्यपि इस दौरान उन्हें स्थानीय विकास और विपक्षी दलों की राजनीतिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। फिर भी जनता ने अश्विनी कुमार चौबे पर अपना विश्वास बार-बार व्यक्त किया। यह विजय केवल चुनावी सफलता नहीं थी, बल्कि जनता के मन में बसे उस विश्वास का प्रमाण थी, जो उन्होंने अपने कार्य और समर्पण से अर्जित किया।

उनका दिनचर्या अधिकांश समय जनता के बीच ही बीतता था—गाँव-गाँव जाकर समस्याएँ सुनना और समाधान खोजना। यही कारण था कि जनता उन्हें नेता नहीं, बल्कि अपना प्रतिनिधि और हितैषी मानती थी।

“नेता वह जो साथ हो, हर दुःख-सुख की बात ।”

विधायक से सांसद तक - बक्सर की ओर

भागलपुर में पाँच बार की सफलता के बाद उन्हें बक्सर संसदीय क्षेत्र से लोकसभा प्रत्याशी बनाया गया।

“बक्सर की भूमि स्वयं में ऐतिहासिक और पावन है। यह महर्षि विश्वामित्र की तपस्थली रही है, जहाँ तप और त्याग की ज्योति प्रज्वलित हुई। यही वह भूमि है जहाँ भगवान श्रीराम ने शिक्षा, दीक्षा और कठोर परीक्षा का सामना किया। यहाँ अयोध्या के साधारण राजकुमार राम पराक्रमी और धर्मनिष्ठ राम के रूप में प्रतिष्ठित हुए। यही भूमि विष्णु भगवान के प्रथम मनुज अवतार, वामन की प्रकट-भूमि भी है, जिसने धर्म और सत्य की विजय का उद्घोष किया। ऐसे पावन क्षेत्र से सांसद बनना श्री अश्विनी कुमार चौबे के लिए केवल एक राजनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक महान सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दायित्व भी था।”

सांसद चुने जाने के बाद उन्होंने संसद में गंगा संरक्षण, पर्यावरण सुधार, शिक्षा और ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर व्यावहारिक व दूरदर्शी सुझाव रखे।

“राम-दीक्षा की भूमि यह, वामन का अवतार।
बक्सर की पावन धरा, संस्कृति का आधार॥”

लाल मुनि चौबे जी का आशीर्वाद

बक्सर क्षेत्र में पूर्व सांसद लाल मुनि चौबे जी का बड़ा प्रभाव था। टिकट बदलकर अश्विनी चौबे को प्रत्याशी बनाया गया, तो संगठन और जनता में मिश्रित प्रतिक्रिया थी। परंतु लाल मुनि चौबे जी ने उन्हें खुला समर्थन और आशीर्वाद दिया। यह गुरु-शिष्य परंपरा जैसी निरंतरता थी, जिसने चुनाव को केवल राजनीतिक प्रतिस्पर्धा न रहने दिया।

"जहाँ बड़े का स्नेह हो, और नया पथ-प्रदर्श ।
वहीं सफलता हो निश्चित, जीवन बने आदर्श ॥"

संसद में पहली उपस्थिति

सांसद बनने के बाद उनकी उपस्थिति प्रारंभ से ही प्रभावशाली रही। वे गरीब, किसान, मजदूर और वंचित समाज की समस्याएँ उठाते और ठोस समाधान सुझाते। उनके भाषण नीति और भावना दोनों का संतुलन लिए होते थे।

"नृपं नृपं वन्दयते प्रजायाः हितं वदन्।"
(सच्चा नेता वही है जो प्रजा के हित की वाणी बोले।)

बिहार के स्वास्थ्य मंत्री के रूप में योगदान

जब श्री अश्विनी कुमार चौबे बिहार के स्वास्थ्य मंत्री बने, उस समय राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था अनेक चुनौतियों से जूझ रही थी। ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, स्वच्छता की कमी और अस्पतालों में संसाधनों का संकट आम बात थी। ऐसे कठिन समय में उन्होंने अपने कार्यों से यह सिद्ध किया कि संकल्प और दूरदर्शिता से सबसे कठिन परिस्थितियाँ भी सुधारी जा सकती हैं। "स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल में कई सकारात्मक पहल हुईं, यद्यपि सीमित संसाधनों और प्रशासनिक बाधाओं के कारण कुछ लक्ष्य पूर्णतः प्राप्त नहीं हो सके।

11,000 शौचालयों का निर्माण - स्वच्छता का महादान

उनके कार्यकाल की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि थी–**11,000 शौचालयों का निर्माण**। यह केवल ईंट और पत्थर की दीवारें खड़ी करना नहीं था, बल्कि यह महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा का अभियान था। गाँवों की महिलाएँ, जिन्हें खुले में शौच के लिए जाना पड़ता था, असुरक्षा और अपमान की पीड़ा झेलती थीं। चौबे जी ने इसे जीवन-मरण का प्रश्न माना और इस दिशा में ठोस कदम उठाए।

उन्होंने कहा था–
"कन्या-दान को सबसे बड़ा दान माना जाता है, परंतु शौचालय निर्माण भी उसी श्रेणी का पुण्य है, क्योंकि यह नारी की सुरक्षा और सम्मान का रक्षक है।"

इस पहल ने न केवल ग्रामीण महिलाओं को गरिमा दी, बल्कि बीमारियों की रोकथाम, बच्चों की शिक्षा में निरंतरता और समाज में स्वच्छता की नई संस्कृति स्थापित की।

“शौच बना जब दान सम, नारी का अभिमान।
कन्या-दान सम पुण्य यह, जन-जन का उत्थान॥”

स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी योगदान

श्री चौबे जी ने केवल स्वच्छता पर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली के सुधार पर ध्यान केंद्रित किया।

- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण
- दूरदराज़ गाँवों तक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार
- डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की भर्ती
- औषधि आपूर्ति श्रृंखला का आधुनिकीकरण

उनका स्पष्ट सिद्धांत था:
“स्वास्थ्य सेवा का वास्तविक लाभ तभी है जब गरीब से गरीब व्यक्ति तक पहुँचे।”

इसी आधार पर उन्होंने ऐसी नीतियाँ लागू कीं जिनसे गरीबों को मुफ्त दवाएँ उपलब्ध होने लगीं और प्राथमिक स्तर पर ही उपचार संभव हुआ।

समग्र चिकित्सा पद्धति का समावेश

उनकी दृष्टि केवल आधुनिक चिकित्सा तक सीमित नहीं थी। वे मानते थे कि भारतीय परंपरा में निहित आयुर्वेद और योग जीवन को संतुलन प्रदान करते हैं। गीता के श्लोक को आधार मानकर उन्होंने इसे नीति में जोड़ा–

“योगः कर्मसु कौशलम्।”
(योग से ही जीवन में संतुलन संभव है।)

इस दृष्टिकोण ने बिहार की स्वास्थ्य नीति में आयुर्वेद, योग और आधुनिक चिकित्सा का समन्वय प्रस्तुत किया।

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में विशेष योगदान

बिहार की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक थी उच्च मातृ और शिशु मृत्यु दर। चौबे जी ने इसके लिए विशेष कार्यक्रम चलाए:

- गर्भवती महिलाओं की नियमित स्वास्थ्य जाँच
- पोषण सहायता योजनाएँ
- प्रसव सुविधा केंद्रों की स्थापना

- स्वास्थ्य कर्मियों का प्रशिक्षण

इन प्रयासों से हजारों परिवारों को राहत मिली और मातृत्व सुरक्षित हुआ।

केंद्रीय मंत्री के रूप में राष्ट्रीय सेवा

आयुष्मान भारत - गरीबों का जीवन कवच

केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री के रूप में चौबे जी का सबसे बड़ा योगदान रहा **आयुष्मान भारत योजना** को गति देना। यह विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है। उनके शब्दों में–

"कोई भी नागरिक केवल इसलिए मृत्यु को प्राप्त न हो कि उसके पास इलाज का धन नहीं।"

यह केवल नारा नहीं, बल्कि उनका संकल्प था। इस योजना ने लाखों निर्धन परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की और यह विश्वास दिलाया कि बीमारी अब मृत्यु का पर्याय नहीं रही।

संस्कृत का श्लोक उनके दर्शन को और स्पष्ट करता है–
"आरोग्यम् परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।"
(स्वास्थ्य सबसे बड़ा भाग्य है और सभी लक्ष्यों की प्राप्ति का आधार है।)

उपभोक्ता कल्याण और खाद्य वितरण

उपभोक्ता मामले और खाद्य वितरण मंत्रालय में रहते हुए उन्होंने कई सुधार किए–

- राशन वितरण प्रणाली में पारदर्शिता
- उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा
- निगरानी तंत्र का सुदृढ़ीकरण
- गरीबों तक समय पर खाद्य सामग्री पहुँचाना

उनका मानना था कि–
"भूख और अन्याय दोनों ही लोकतंत्र के सबसे बड़े शत्रु हैं। इन्हें समाप्त किए बिना सच्चा जनकल्याण संभव नहीं।"

पर्यावरण संरक्षण - प्रकृति ही संस्कृति

श्री अश्विनी कुमार चौबे का मानना रहा है कि **"प्रकृति की रक्षा ही संस्कृति की रक्षा है।"**
वे पर्यावरण संरक्षण को केवल प्रशासनिक या तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि संस्कृति और अस्तित्व का प्रश्न मानते हैं।

गंगा संरक्षण और हरित भारत

उनके कार्यकाल में गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए व्यापक अभियान चलाया गया। वृक्षारोपण को उन्होंने आंदोलन का रूप दिया और हरित भारत कार्यक्रमों को नई दिशा दी। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए नीतिगत रूपरेखा तैयार की।

उन्होंने UNO के *Clean Air for Blue Sky Function* के मंच से यह आह्वान किया:
"यदि हमें नील गगन चाहिए तो हमें स्वच्छ वायु को अपना संकल्प बनाना होगा।"

"स्वच्छ पावन नील गगन" उनके लिए केवल नारा नहीं था, बल्कि मानवता के भविष्य की संकल्पना थी। वे कहते थे कि प्रदूषण के काले धुंधलके को हटाकर ही आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा और जीवन का नीला आकाश सुरक्षित किया जा सकता है।

ऋग्वेद का यह मंत्र उनके पर्यावरण दर्शन का आधार था:
"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"
(पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।)

कोविड-19 महामारी - चुनौतियों के बीच अडिग सेवा

जब पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी से जूझ रही थी, भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था की कठिन परीक्षा हुई। बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन का संकट और भयावह परिस्थितियों के बीच भी श्री चौबे जी अग्रिम पंक्ति में डटे रहे।उनका स्पष्ट और दृढ़ आदेश था:
"गरीब और वंचित वर्ग के लिए अस्पताल का द्वार कभी बंद न हो; सेवा का मार्ग सदैव खुला रहना चाहिए।"

"कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान बिहार में भी ऑक्सीजन की कमी और अस्पताल बिस्तरों के संकट की गंभीर समस्या थी। इस कठिन समय में स्वास्थ्य व्यवस्था की कमियाँ उजागर हुईं, जिनसे निपटने में भारत सरकार सहित चौबे जी को कड़ी आलोचना का सामना भी करना पड़ा। यद्यपि, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मरीजों की सहायता करने का प्रयास जारी रखा।"

व्यक्तिगत संघर्ष और समर्पण

महामारी की लहर में वे स्वयं दो बार कोरोना संक्रमित हुए। रोग ने उनके शरीर को अवश्य पीड़ित किया, किंतु उनकी सेवा-निष्ठा तनिक भी डिगी नहीं। स्वस्थ होते ही वे पुनः जनसेवा में लग गए।

उनका आचरण मानो इस अमर संदेश का मूर्त रूप था- **"सेवा ही सच्चा साधन है, और जो व्यक्ति सेवा में रत रहता है, उसे कोई भी विपत्ति पराजित नहीं कर सकती।"**

कार्यनिष्ठा का सम्मान

उनकी तपस्वी निष्ठा और अदम्य कार्यशक्ति को देखते हुए मोदी सरकार ने कैबिनेट पुनर्गठन के समय उन्हें दो मंत्रालयों की जिम्मेदारी सौंपी। उनका जीवन इस शाश्वत श्लोक का सजीव उदाहरण

बन गया–

“परहितार्थं इदं शरीरम्।”

(यह शरीर परहित के लिए है।)

स्वच्छता आंदोलन के अग्रदूत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2014 में *स्वच्छ भारत अभियान* शुरू करने से पहले ही चौबे जी बिहार में **11,000 शौचालय निर्माण** करा चुके थे। यह उनकी दूरदर्शिता और सामाजिक चेतना का उत्कृष्ट प्रमाण था। उनका मानना था–

“स्वच्छता केवल सुविधा नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की गरिमा है।”

इस दृष्टि से वे स्वच्छ भारत आंदोलन के अग्रदूतों में गिने जाते हैं। उन्होंने स्वच्छता को केवल स्वास्थ्य का विषय न मानकर उसे संस्कृति और संस्कार से जोड़ा।

राजनीतिक चुनौतियाँ और आलोचनाएँ

राजनीतिक जीवन में चौबे जी को विपक्षी दलों की आलोचना का सामना करना पड़ा है। कुछ नीतिगत निर्णयों पर विवाद भी हुए हैं। विशेषकर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की गति को लेकर कई बार सवाल उठाए गए हैं। इन आलोचनाओं के बावजूद, उन्होंने अपने कार्यों को जारी रखा और जनता के बीच अपनी छवि कर्मठ राजनेता के रूप में बनाए रखने का प्रयास किया।"

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण - सनातन संस्कृति समागम 2022

अहिरौली (बक्सर) की पावन भूमि पर आयोजित यह महोत्सव भारतीय संस्कृति का भव्य उत्सव था। श्रीराम कर्मभूमि न्यास के तत्वावधान में यह आयोजन न केवल सांस्कृतिक चेतना का संगम बना, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का भी संदेशवाहक हुआ।

विशिष्ट सहभागिता

- **धार्मिक गुरुजन:** जगद्गुरु पद्मविभूषण स्वामी रामभद्राचार्य, स्वामी अनंताचार्य, लक्ष्मीप्रपन्न जीयर स्वामी
- **राष्ट्रीय नेतृत्व:** सरसंघचालक मोहन भागवत, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि:** मॉरिशस, इंडोनेशिया और श्रीलंका से आए विद्वानों ने इसे *“रामकथा और सनातन संस्कृति का वैश्विक सेतु”* कहा।

आयोजन की भव्यता

इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुँचे, यद्यपि कुछ लॉजिस्टिक समस्याओं और भीड़ प्रबंधन की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। फिर भी, समग्र रूप से यह एक सफल सांस्कृतिक आयोजन रहा और इसे ऐतिहासिक बना दिया।

विराट सनातन महाकुंभ 2025 – एक ऐतिहासिक मोड़

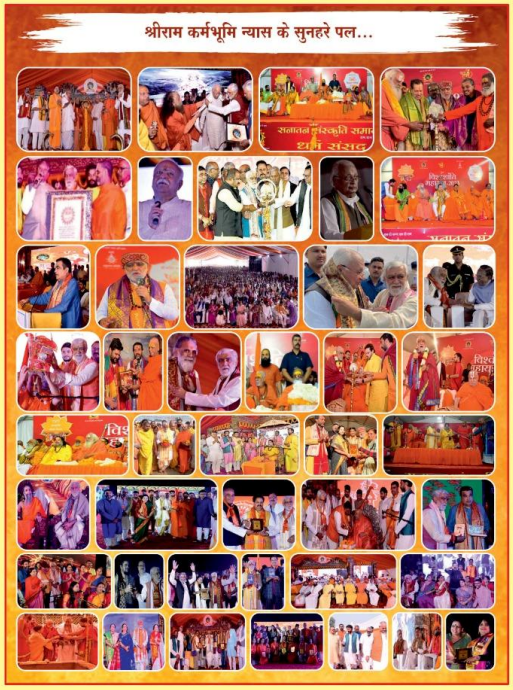

6 जुलाई 2025 को पटना का गांधी मैदान सनातन संस्कृति का महासागर बन गया। लाखों श्रद्धालु एकत्र हुए और इस महाकुंभ ने संस्कृति के पुनर्जागरण का स्वर गूँजाया।

दिव्य वातावरण

महाकुंभ के प्रारंभ में ही आकाश वैदिक मंत्रों, हनुमान चालीसा और शंखध्वनि से गूँज उठा। जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य की ज्ञानगंगा और बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र शास्त्री की ओजस्वी वाणी ने वातावरण को अलौकिक बना दिया। 108 गाँवों से लाए गए शंखों का सामूहिक नाद मानो देवगणों का आशीर्वाद प्रतीत हुआ।

यह आयोजन "वसुधैव कुटुम्बकम्" के शाश्वत मंत्र का साकार रूप बन गया।

परशुराम की प्रतीक्षा - एक नया युग संदेश

धर्मयुद्ध का आधुनिक स्वरूप

महाकुंभ का पूरा नाम था - **"सनातन महाकुंभ - परशुराम की प्रतीक्षा।"**

यह केवल ऐतिहासिक स्मरण नहीं था, बल्कि आधुनिक समाज के लिए संदेश था कि अब भी अन्याय और भ्रष्टाचार से संघर्ष हेतु एक परशुराम की आवश्यकता है।

लोकतांत्रिक परशुराम की संकल्पना

प्राचीन परशुराम ने अत्याचारियों का अंत अस्त्र-शस्त्र से किया था।
आज के लोकतांत्रिक युग में नया परशुराम जनता के बीच से उठेगा–

- उसका अस्त्र होगा **नीति और जनसहयोग**,
- उसकी शक्ति होगी **लोकतांत्रिक मतदान**,
- और उसका आशीर्वाद होगा **जनता का विश्वास**।

इसी से वर्तमान समय के अन्यायी शासकों का अंत संभव होगा।

"धनु न शस्त्र न रक्त से, अब नीति से संग्राम।
जन-जन का आशीष जिसे, बने युग का परशुराम॥"

ऐतिहासिक परंपरा की निरंतरता

यह वही परंपरा है जो महात्मा गांधी के सत्याग्रह और जेपी आंदोलन में भी दिखाई दी थी, जहाँ हथियार नहीं, बल्कि सत्य और जनमत की शक्ति ने साम्राज्यवादी सत्ता को झुकाया।

श्री अश्विनी कुमार चौबे - संकट काल का सेवक

कोविड काल की कठिनाइयों में चौबे जी ने यह सिद्ध किया कि सच्चा नेता वही है जो संकट की घड़ी में भी जनता के साथ खड़ा रहे।
उनकी स्वच्छता पहल और सांस्कृतिक आयोजनों ने उन्हें केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि संस्कृति का प्रहरी और जन-जन की आशा बना दिया।

"जो संकट में साथ दे, वही सच्चा वीर।
जन-जन का विश्वास है, सेवा उसका धीर॥"

जीवन दर्शन - तप, तेज और त्याग

राजनीति में तप- उनके लिए राजनीति सत्ता की सीढ़ी नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा की तपश्चर्या थी।
मंत्री या सांसद पद उन्होंने कभी विशेषाधिकार नहीं, बल्कि सेवा का दायित्व माना।

संस्कृति में तेज - उनका विश्वास था कि संस्कृति केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की ऊर्जा और भविष्य का आलोक है। यदि राजनीति संस्कृति से कट जाए तो वह खोखली हो जाती है।

समाजसेवा में त्याग- गरीबों और वंचितों की सेवा में ही उन्होंने अपने जीवन का आनंद पाया।
आपदा के समय राहत पहुँचाना, शिक्षा व संस्कार के लिए मंच तैयार करना–ये सब उनके जीवन का अंग बने।

"तप तेज त्याग त्रिवेणी, जीवन में जो धारे।
रामभक्ति से जो जुड़ा, वे जन-मन को होते प्यारे॥"

राम का आत्मसात - आध्यात्मिक आधार

चौबे जी का जीवन-दर्शन केवल विचारों तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मसात हुआ। वे स्वयं कहते हैं: **"राम मेरे लिए केवल आराध्य नहीं, बल्कि जीवन का पथ हैं। राजनीति में मर्यादा, संस्कृति में करुणा और समाजसेवा में त्याग - ये सब मुझे राम से ही प्राप्त हुए हैं।"**

उनकी राजनीति में राम की मर्यादा, नेतृत्व में राम की करुणा और त्याग में राम का आदर्श झलकता है।
वे मानते हैं- **"रामो विग्रहवान् धर्मः।"** (राम धर्म के साकार स्वरूप हैं।)

साहित्यिक योगदान - विचारों की अमर धरोहर

"सनातन संग भारत" - संस्कृति राष्ट्र की संकल्पना

इस पुस्तक में चौबे जी ने स्पष्ट किया कि भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि **संस्कृति-राष्ट्र** है। उन्होंने सनातन संस्कृति को भारत की आत्मा बताया और सिद्ध किया कि जब तक संस्कृति जीवित है, तब तक भारत जीवित है।

"त्रिनेत्र" - केदारनाथ त्रासदी का सजीव चित्रण

केदारनाथ की भीषण त्रासदी के बाद लिखी इस पुस्तक में उन्होंने केवल आपदा की पीड़ा ही नहीं, बल्कि **आपदा प्रबंधन, प्रकृति संरक्षण और मानवता की शक्ति** का भी संदेश दिया।

इन ग्रंथों से यह स्पष्ट है कि वे केवल राजनेता या वक्ता ही नहीं, बल्कि एक **विचारक और लेखक** भी हैं।

धर्माधारित लेखन का महत्व

उन्होंने धर्म को जीवन का आधार माना और यही दृष्टि उनके लेखन में भी परिलक्षित होती है।
संस्कृत श्लोक उनके विचारों को परिभाषित करता है–

"श्रुतं च दृष्टं च पुनः पुनश्च, धर्मेण हीनं न पुनाति लोकम्।"
(केवल सुना-सुनाया या देखा हुआ ज्ञान तब तक समाज को शुद्ध नहीं कर सकता जब तक उसमें धर्म का आधार न हो।)

राष्ट्र पुनरुत्थान का मार्ग - राजनीति और धर्म का संगम

श्री अश्विनी कुमार चौबे का जीवन स्वयं एक ग्रंथ है। इसकी वाणी हमें यह संदेश देती है–
"राजनीति का धर्म, धर्म की राजनीति।"

उनका संपूर्ण जीवन इस त्रिधारा का संगम है–

- **राजनीति में तपस्विता**

- **संस्कृति में तेजस्विता**
- **समाजसेवा में त्यागमयता**

जब नेता तपस्वी हो, संस्कृति तेजस्विनी हो और समाज त्यागमयी हो, तभी भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

"दीपस्तंभ बनता जगत में, जो करता सत्कार्य।
उसकी गाथा अमर रहे, काल करे स्वीकारी॥"

दीपस्तंभ का प्रकाश - आने वाली पीढ़ियों के लिए

उनकी पुस्तकें *"सनातन संग भारत"* और *"त्रिनेत्र"* भविष्य की पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ हैं। यह प्रमाण है कि वे **विचारक, लेखक और कर्मयोगी** – तीनों रूपों में समान रूप से प्रतिष्ठित हैं। उनके जीवन का अंतिम संदेश यही है कि राजनीति, संस्कृति और समाजसेवा अलग-अलग धाराएँ नहीं, बल्कि एक ही गंगा की तीन धाराएँ हैं।

वे हर संबोधन का समापन इस शांति मंत्र से करते हैं–
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥"

यह शांति मंत्र मानो उनके जीवन का ध्वनि-पत्र है।

उनकी जीवनगाथा हमें आह्वान करती है कि–

- राजनीति तपस्वी हो,
- संस्कृति तेजस्विनी हो,
- समाज त्यागमयी हो।

श्री अश्विनी कुमार चौबे का राजनीतिक सफर उपलब्धियों और चुनौतियों से भरा रहा है। उनके कार्यों का मूल्यांकन समय करेगा, लेकिन सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता।" कि **भारत का उत्थान केवल विकास से नहीं, बल्कि संस्कृति और सेवा से ही संभव है।**

समानि व आकूतिः
श्री कलराज मिश्र
राधेश्याम
एक साथ चुनाव
(एक राष्ट्र, एक चुनाव)
मतदाता जागरूकता अभियान

भाजपा का राष्ट्र विकास, विरोधियों का व्यक्तिगत विकास : अश्वनी चौबे

राधेश्याम चैरिटेबल फाउंडेशन ने किया मतदाता जागरूकता सम्मेलन

कार्यक्रम को संबोधित करते भाजपा के पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे। मंचासीन हैं बाएं से महानगर अध्यक्ष राजू यादव, महापौर विनोद अग्रवाल, पदम सिंह शर्मा, गन्ना विकास एवं चीनी मिल मंत्री लक्ष्मीनारायण चौधरी, गोवर्धन विधायक मेघश्याम सिंह, बलदेव विधायक पूरन प्रकाश और विधान परिषद सदस्य ओमप्रकाश सिंह ● जागरण

जागरण संवाददाता, मथुरा: राधेश्याम चैरिटेबल फाउंडेशन ने 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की दिशा में जनचेतना को बढ़ावा देने के लिए रविवार को सरस्वती कुंड स्थित अग्रवाटिका में मतदाता जागरूकता सम्मेलन का आयोजन किया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्वनी चौबे ने कहा कि भाजपा के लिए राष्ट्र का विकास प्राथमिकता है, जबकि विरोधियों के लिए व्यक्तिगत विकास महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि बार-बार चुनाव होने से न केवल संसाधनों की बर्बादी होती है, बल्कि यह प्रशासनिक और विकास कार्यों में भी रुकावट उत्पन्न

'एक राष्ट्र, एक चुनाव' भारत के लोकतंत्र की गति को तीव्र और पारदर्शी बनाएगा, कार्यों में नहीं होगी रुकावट

करता है। 'एक देश, एक चुनाव' की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने इसे देश की समृद्धि, संसाधनों के संरक्षण और लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक बताया। चौबे ने कांग्रेस सहित अन्य पार्टियों पर इस पहल का विरोध करने के लिए निशाना साधा।

गन्ना विकास एवं चीनी मिल मंत्री लक्ष्मीनारायण चौधरी ने कहा कि प्रत्येक नागरिक को मतदान करने के साथ-साथ दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। महापौर विनोद अग्रवाल ने लोकतंत्र की असली ताकत जनता को बताया। भाजपा महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव ने कहा कि यहां के नागरिक हमेशा राष्ट्रहित के मुद्दों पर अग्रणी रहे हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्वनी चौबे, लक्ष्मीनारायण चौधरी, महापौर विनोद अग्रवाल, और अन्य नेताओं ने किया। मीडिया प्रभारी श्याम शर्मा ने 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' के समर्थन में शपथ दिलाई। संचालन ऋचा बावेजा ने किया। विधायक पूरन प्रकाश, ठा. मेघश्याम सिंह, और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

श्री कलराज मिश्र
(पूर्व राज्यपाल)
(कैबिनेट मंत्री)
मतदाता जागरूकता
एक
चुनाव
तिथि: 27

लोकतंत्र सेनानी संघ
(1975 आपातकाल बंदियों का अखिल भारतीय संगठन)
एवं
दिवस का आयोजन
1975
आपातकाल में

लोकतन्त्र सेनानी संघ की बैठक के पूर्व लोकतन्त्र सेनानी संघ के अध्ययक्ष श्री कैलाश सोनी पूर्व सांसद राज्यसभा

यह लेख उनके परामर्शदाता के द्वारा लिखा गया है इसलिए इसमें लिखे गए विचारो से श्री अश्वनी कुमार चौबे की सहमति अनिवार्य हो आवश्यक नहीं|